Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जैव विविधता का महत्व एवं संरक्षण

डॉ. धर्मेन्द्र पाटीदार*

* सहायक आचार्य (भूगोल) राजकीय महाविद्यालय, सागवाड़ा, डूँगरपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – जैव विविधता से अभिप्राय विश्व में पाए जाने वाले विभिन्न जीवों तथा उनकी प्रजातियों से है। जैव विविधता विश्व के महत्वपूर्ण संसाधन है। इनकी विविधता तथा सघनता का प्रभाव किसी भी क्षेत्र के आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है। किसी भी देश का विकास इसकी जैव विविधता से जुड़ा हुआ है।

वर्तमान में अनेक जैव प्रजातियां विलुप्त हो गई है और अनेकों प्रजातियां संकटग्रस्त है। इसी कारण जैव विविधता के प्रति विश्व के कई देश जागरूक हो रहे है। साथ ही कई संगठन इनके संरक्षण हेतु प्रयास कर रहे है।

जैव विविधता पर आज सर्वाधिक संकट हो रहा है तथा प्रतिवर्ष कई सैकड़ों प्रजातियां विलुप्त होती जा रही है जिस कारण जैव विविधता के विभिन्न पक्षों की जानकारी इसके संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण है।

जैव विविधता शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अमेरिकी कीट विज्ञानी इ.ओ. विल्सन ने सन् 1986 में अपनी रिपार्ट में किया था। अंग्रेजी का बायोडायवर्सिटी शब्द दो शब्दों बायोलॉजिकल तथा डाइवर्सिटी का समूह है जिसे हिन्दी में जैव विविधता द्वारा व्यक्त किया जाता है।

जैव विविधता का मुख्य कारण भौगोलिक पर्यावरण में विविधता का होना है तथा यह करोड़ों वर्षो की अवधि में चलने वाली निरंतर प्रक्रिया का परिणाम है। प्रकृति के निर्माण व अस्तित्व के लिए जैव विविधता की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसीलिए यदि जैव विविधता का विनाश होता है तो पर्यावरण चक्र में गतिरोध आने के कारण जीवों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। आज विश्व में जैव विविधता के प्रति जागरूक होने का कारण जैव विविधता का तीव्र गति से विनाश होना है। वर्तमान में विश्व में प्रतिवर्ष हजारों प्रजातियां विलुप्त हो रही है। इस प्रकार का विनाश संपूर्ण संसार के लिए नुकसानदायक है। अत: जैव विविधता के समुचित स्वरूप की जानकारी कर इसका संरक्षण करना अति महत्वपूर्ण है।

जैव विविधता के स्तर– जैव विविधता को निम्नांकित तीन स्तरों या वर्गो में बांटा गया है–

1. **आनुवांशिक विविधता–** विश्व में कई प्रजातियां पायी जाती है। प्रत्येक प्रजाति में जीन की भिन्नता मिलती है। आनुवांशिक विविधता में जीन की वंशानुगत विभिन्नताएं आती है। आनुवांशिक विविधता की उत्पत्ति वातावरण से जीवों को अनुकूलित करने हेतु एवं जीवनयापन हेतु आवश्यक है। यदि हम कुछ जीवों को नष्ट कर दे तो जीन की अनुपस्थिति विविधता की मात्रा घटा देगी व जीवों में अनुकूलन कम हो जायेगा। साथ ही पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन पैदा हो जाएगा।

2. **प्रजातीय विविधता–** प्रजातीय विविधता में एक ही प्रजाति के जीवों में स्थानों के आधार पर विविधता पायी जाती है। प्रजातीय विविधता से अभिप्राय किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाली जातियों से है। जिन क्षेत्रों में अधिक आवास होंगे वहां जातीय विविधता अधिक पायी जाती है।

3. **पारिस्थितिकी विविधता–** पृथ्वी पर विविध प्रकार के पारिस्थितिकी तंत्र है जो विविध प्रकार की प्रजातियों के निवास स्थान है। एक भौगोलिक क्षेत्र में विभिन्न पारिस्थितिकी तंत्र हो सकते है जैसे– घास के मैदान, वनीय, मरूस्थलीय, पर्वतीय, नदी, झील, तालाब आदि। ये भिन्नता विविध प्रकार के जीवन को विकसित करती है। ये एक तंत्र से दूसरे तंत्र में भिन्न होते है। यही विविधता पारिस्थितिकी विविधता कहलाती है।

इनके अलावा क्षेत्रीय विस्तार के आधार पर भी जैव विविधता को स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक जैव विविधता में बांटा जा सकता है।

जैव विविधता का महत्व–जैव विविधता प्रकृति का अभिन्न अंग तथा यह पर्यावरण को सुरक्षित रखने व पारिस्थितिकी तंत्र को संचालित करने में मुख्य भूमिका निभाती है। यह पोषण के पुन:चक्रण, जल व वायु चक्रण, मृदा निर्माण आदि के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में भी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान करती है जैसे भोजन, आवास, ऊर्जा, कपड़ें, औषधियां आदि। ये आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण होते है। जैव विविधता वाले क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य तथा मनोरंजन स्थल के रूप में भी उपयोगी होते है।

जैव विविधता का ह्रास–मानव द्वारा विकास हेतु किए गए अनेक कार्यो ने पर्यावरण तथा उसके जैविक एवं अजैविक घटकों को क्षति पहुंचायी है। जिस कारण कई जीवों एवं पादपों की प्रजातियों का विनाश हुआ तथा जैव विविधता में कमी आयी है।

मानव की जनसंख्या में वृद्धि, आधुनिकीकरण, प्रदूषण, पर्यावरण विराधी कार्यो ने जैव विविधता का ह्रास किया है। इन मानवीय कार्यो से पौधों एवं जीवों की कई प्रजातियां समाप्त हो गई है।

जैव विविधता की दृष्टि से शीताष्ण तथा गर्म वर्षा वन सर्वाधिक सम्पन्न माने जाते है किन्तु प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से इन्हीं वनों का विनाश सबसे अधिक हुआ है। जिस कारण पौधों की प्रजातियां लुप्त होती जा रही है। साथ ही उनमें निवास करने वाले जीवों की प्रजातियां भी उनके आवास व भोजन के समाप्त होने से लुप्त होती जा रही है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वनों के विनाश, मानव द्वारा वन्य जीवों के शिकार, उनके प्राकृतिक आवास को समाप्त करने आदि के कारण वर्तमान में तीव्र गति से जैव विविधता

का ह्रास हो रहा हैं यह एक चिन्ताजनक विषय है।

जैव विविधता का संरक्षण– जैव विविधता समस्त पृथ्वी के जीवन के लिए एक अनिवार्य तत्व है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार प्रतिवर्ष वन संपदा, वनीय जीव जन्तुओं की विशिष्ट जातियों तथा पशु संपदा का बड़ी मात्रा में लोप होता जा रहा है। समय रहते इनको नहीं रोका गया तो जलवायु परिवर्तन, खाद्यान्न संकट, बीमारियां आदि में बढ़ोतरी से मानव जीवन संकट में आ जाएगा। भीषण बाढ़, सूखा, बढ़ते तापमान आदि के कारण कृषि, उद्योग–धंधों आदि पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। अत: हमें इन आपदाओं से बचने हेतु जैव विविधता का संरक्षण करना अति आवश्यक है।

जैव विविधता के संरक्षण से अभिप्राय जैव विविधता का बचाव तथा उनके आवास को बचाना है। इनके संरक्षण से अनेक प्रजातियों को विलुप्त होने से बचाया जा सकता है। जैव विविधता का बने रहना पारिस्थितिकी तंत्र की क्रियाशीलता तथा पर्यावरण के संरक्षण के लिए आवश्यक है। जैव विविधता को निम्नांकित दो प्रकार से संरक्षित किया जा सकता है–

1. स्थानिक संरक्षण
2. अन्यत्र संरक्षण

1. स्थानिक संरक्षण–स्थानिक संरक्षण से तात्पर्य जीवों तथा वनस्पतियों की प्रजातियों को उनके प्राकृतिक आवास स्थलों पर ही संरक्षित करने से है। यह संरक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है क्योंकि इसके चारों ओर के प्राकृतिक वातावरण को सुरक्षित किया जाता है जो जीवों तथा वनस्पतियों को विकसित होने एवं उनके अस्तित्व को बनाए रखने हेतु आवश्यक होता है। इस प्रकार के विशिष्ट स्थलों में विभिन्न प्रजातियों का संरक्षण प्राकृतिक रूप से किया जाता है। इस हेतु राष्ट्रीय पार्क, अभ्यारण्य, जीवमंड़ल रिजर्व आदि की स्थापना की जाती है। दुनिया के समस्त देश इनके प्रति जागरूक होने लगे है तथा उन्होंने इनकी स्थापना करना प्रारम्भ कर दिया है। यूनेस्को द्वारा सन् 1971 में 'मानव एवं जीवमंड़ल कार्यक्रम' शुरू किया गया। भारत में भी कई क्षेत्रों में जीवमंड़ल रिजर्व स्थापित किए गए। साथ ही राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभ्यारण्यों की स्थापना भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में की गई है। बाघ परियोजना द्वारा भी स्थानिक जैव विविधता का संरक्षण किया जा रहा है।

2. अन्यत्र संरक्षण –जब जीवों तथा वनस्पतियों को उनके मूल आवास क्षेत्र से बाहर किसी अन्य जगह पर संरक्षित किया जाता है तो उसे अन्यत्र अथवा बर्हिस्थान संरक्षण कहा जाता है। यह कार्य चिड़ियाघर, जीव विज्ञान पार्क, पादप उद्यान, कृषि शोध केन्द्रों, वन संस्थानों आदि द्वारा किया जाता है। इस प्रकार जीवों व वनस्पतियों के प्राकृतिक स्थलों के समाप्त होने से कृत्रिम आवास स्थलों को विकसित कर जैव विविधता को संरक्षित किया जाता है। भारत में भी इस प्रकार के कृत्रिम आवासों का विकास कई क्षेत्रों में किया गया है।

निष्कर्ष– जैव विविधता पर्यावरण की मौलिकता के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्राकृतिक आवासों का संरक्षण इस दिशा में प्रमुख प्रयास माना जा सकता है। जैव विविधता किसी एक देश से सम्बन्धित न होकर सम्पूर्ण विश्व से सम्बन्धित है अत: इसके संरक्षण हेतु सम्पूर्ण विश्व के सहयोग की आवश्यकता है। इसी कारण विश्व के कई संगठन इस कार्य में अपना सहयोग प्रदान कर रहे है। इन संगठनों की स्थापना जैव विविधता के क्षरण तथा पारिस्थितिकी असंतुलन से उत्पन्न समस्याओं के समाधान हेतु विश्व स्तर पर की गयी है। ये संगठन वन्य जीवों, वनों आदि के संरक्षण का कार्य कर रहे है। वर्तमान में जैव विविधता का क्षरण तीव्र गति से हो रहा है। अत: हमें जीवों, पेड़ पौधों आदि के संरक्षण की ओर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। इनके अभाव में प्रकृति के स्वरूप की कल्पना नहीं की जा सकती है। जैव विविधता के संरक्षण हेतु विश्व के सभी देशों का भरसक प्रयास करने चाहिए ताकि हमारी पृथ्वी पर जैव विविधता बची रहे तथा मानव जीवन भी इसके विलुप्त होने से उत्पन्न खतरों से बचा रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Jadhav,H.V.(1995), "Environmental Pollution", Himalaya Publishing House, Bombay and Delhi.
2. Mcintosh R.P. (1963): Ecosystem,evolution and relation Patterns of living organisms, American scientist.
3. Mamoriya C.B. and Garg H.S. (2025), "Population Geography", SBPD Publications, Agra (U.P.).
4. सिंह, एस. (2004), 'पर्यावरण भूगोल', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. अली, सलीम (2022),'भारत के पक्षी', बी.एच.एन.एस. पब्लिकेशन, मुम्बई भारत।
6. सैनी, के.सी. (2023), 'पक्षी प्रकृति और पर्यावरण', पैनासीआ रिसर्च फाउन्डेशन, जयपुर।
7. मिश्र डी. के. (2004), 'जनसंख्या, पर्यावरण एवं विकास', ए पी एच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, नई दिल्ली।
8. त्रिपाठी, आर. डी. (2023), 'जनसंख्या भूगोल', वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।

****